



फ्रीबीज और मतदाता व्यवहार : एक अध्ययन

नरपत कुमार¹

¹ नेट जेआरएफ राजनीति विज्ञान, सहायक प्रोफेसर रानीवाड़ा कॉलेज जालोर.

ABSTRACT:

लोकतंत्र में चुनाव एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है, जिसके माध्यम से जनता अपने प्रतिनिधियों और सरकार का चयन करती है। चुनावी राजनीति में मतदाताओं को प्रभावित करने के लिए राजनीतिक दल विभिन्न रणनीतियाँ अपनाते हैं, जिनमें से एक प्रमुख रणनीति फ्रीबीज (Freebies) यानी मुफ्त सुविधाएँ या उपहार देना है। यह प्रवृत्ति हाल के वर्षों में भारत सहित कई लोकतांत्रिक देशों में तेजी से बढ़ी है। फ्रीबीज में मुफ्त राशन, बिजली, पानी, लैपटॉप, मोबाइल फोन, परिवहन सुविधा, कर्ज माफी आदि शामिल होते हैं। राजनीतिक दल इन्हें कल्याणकारी योजनाओं के रूप में प्रस्तुत करते हैं, लेकिन इनका प्रभाव केवल चुनावी नतीजों तक ही सीमित नहीं रहता, बल्कि दीर्घकालिक आर्थिक नीतियों और विकास योजनाओं पर भी पड़ता है। फ्रीबीज का मतदाता व्यवहार पर गहरा प्रभाव पड़ता है। चुनाव के दौरान, कई मतदाता तात्कालिक लाभ को प्राथमिकता देते हैं और दीर्घकालिक प्रभावों की अनदेखी करते हैं। गरीब और निम्न वर्ग के मतदाता अक्सर उन दलों को समर्थन देते हैं जो मुफ्त सुविधाएँ प्रदान करने का वादा करते हैं, जबकि मध्यम और उच्च वर्ग के मतदाता विकास-आधारित नीतियों को अधिक महत्व देते हैं। इसके अलावा, जातीय और क्षेत्रीय कारक भी मतदाताओं के निर्णय को प्रभावित करते हैं।

KEYWORDS:

फ्रीबीज, मतदाता व्यवहार, चुनावी रणनीति, लोकलुभावनवाद, कल्याणकारी योजनाएँ, राजनीतिक प्रभाव, लोकतंत्र, आर्थिक प्रभाव।

PAPER ACCEPTED DATE:

28th November 2024

PAPER PUBLISHED DATE:

30th November 2024

विषय वस्तु

1. फ्रीबीज की परिभाषा और महत्व

लोकतांत्रिक व्यवस्थाओं में चुनाव एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया होती है, जिसमें राजनीतिक दल मतदाताओं को आकर्षित करने के लिए विभिन्न रणनीतियाँ अपनाते हैं। इन्हीं रणनीतियों में एक प्रमुख नीति फ्रीबीज (Freebies) यानी मुफ्त सेवाएँ, उपहार या वित्तीय सहायता प्रदान करने की होती है। इसका मुख्य उद्देश्य मतदाताओं को प्रभावित कर चुनावों में समर्थन प्राप्त करना होता है।

फ्रीबीज क्या है?

फ्रीबीज वे सुविधाएँ हैं जो राजनीतिक दल या सरकारें जनता को बिना किसी सीधा आर्थिक योगदान के प्रदान करती हैं। ये आमतौर पर सामाजिक कल्याण के नाम पर दी जाती हैं लेकिन कई बार इनका उद्देश्य राजनीतिक लाभ अर्जित करना भी होता है।

फ्रीबीज के कुछ सामान्य उदाहरण:

- मुफ्त राशन (चावल, गेहूँ, दाल, तेल, चीनी)
- मुफ्त बिजली, पानी और गैस
- मुफ्त शिक्षा और छात्रवृत्ति
- किसानों के लिए कर्ज माफी
- बेरोजगारी भत्ता
- मुफ्त लैपटॉप और मोबाइल फोन
- मुफ्त सार्वजनिक परिवहन
- महिलाओं और वरिष्ठ नागरिकों के लिए विशेष आर्थिक सहायता

फ्रीबीज का महत्व:

- गरीब और वंचित वर्गों के जीवन स्तर को सुधारने में सहायक

- सामाजिक और आर्थिक समानता बढ़ाने में मददगार
- चुनावी प्रक्रिया में अधिक मतदाताओं को शामिल करने में सहायक
- सरकारों को अपनी लोकप्रियता बनाए रखने में मददगार

लेकिन जब फ्रीबीज की नीति दीर्घकालिक आर्थिक नीतियों और विकास कार्यों की जगह ले लेती है, तो यह गंभीर आर्थिक असंतुलन और राजनीतिक दुष्परिणाम पैदा कर सकती है।

2. मतदाता व्यवहार पर फ्रीबीज का प्रभाव

मतदाता अपने निर्णय कई कारकों के आधार पर लेते हैं, जिनमें नीतियाँ, जातीय और धार्मिक पहचान, क्षेत्रीय आवश्यकताएँ, तथा व्यक्तिगत लाभ प्रमुख हैं। फ्रीबीज इन कारकों को प्रभावित कर सकते हैं और मतदाताओं के व्यवहार में बदलाव ला सकते हैं। फ्रीबीज नीति के सकारात्मक और नकारात्मक दोनों प्रकार के प्रभाव होते हैं। सकारात्मक रूप से, ये समाज के वंचित वर्गों को राहत प्रदान कर सकते हैं, डिजिटल साक्षरता को बढ़ावा दे सकते हैं और शिक्षा तथा स्वास्थ्य सुविधाओं तक पहुँच में सुधार कर सकते हैं। लेकिन नकारात्मक रूप से, यह नीति राजकोषीय घाटे को बढ़ाती है, दीर्घकालिक आर्थिक विकास को बाधित करती है, मेहनत और आत्मनिर्भरता की भावना को कमजोर करती है, और कई बार भ्रष्टाचार एवं राजनीतिक दुरुपयोग को भी बढ़ावा देती है। अंतरराष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में देखा जाए तो अमेरिका और यूरोपीय देशों में कल्याणकारी योजनाएँ दी जाती हैं, लेकिन वहाँ इन पर कड़ी वित्तीय निगरानी रखी जाती है। इसके विपरीत, भारत में फ्रीबीज कई बार आर्थिक नीतियों से अधिक चुनावी रणनीति के रूप में देखे जाते हैं। अतः यह स्पष्ट है कि फ्रीबीज मतदाता व्यवहार को प्रभावित करने का एक प्रमुख साधन बन चुके हैं। लेकिन इनका उपयोग संतुलित और दीर्घकालिक दृष्टिकोण से किया जाना चाहिए, ताकि आर्थिक स्थिरता बनी रहे और वास्तविक विकास संभव हो सके।

(क) तात्कालिक लाभ बनाम दीर्घकालिक प्रभाव

कई बार मतदाता केवल अल्पकालिक लाभ को ध्यान में रखते हैं और दीर्घकालिक आर्थिक

प्रभावों की अनदेखी कर देते हैं। उदाहरण के लिए, यदि किसी राज्य में मुफ्त बिजली दी जाती है, तो जनता इसे राहत के रूप में देखती है, लेकिन यह भविष्य में राजकोषीय घाटे का कारण बन सकता है।

(ख) विभिन्न आर्थिक वर्गों पर प्रभाव

- निम्न वर्ग:** गरीब और मजदूर वर्ग के लोग फ्रीबीज को अपनी आजीविका का हिस्सा मानते हैं और उन दलों को समर्थन देते हैं जो अधिक मुफ्त सुविधाएँ देने का वादा करते हैं।
- मध्यम वर्ग:** यह वर्ग फ्रीबीज और कर भार के बीच संतुलन देखता है। वे तात्कालिक लाभ को महत्व देते हैं लेकिन बढ़ते करों और महंगाई से चिंतित भी रहते हैं।
- उच्च वर्ग:** वे आमतौर पर विकास-आधारित नीतियों को प्राथमिकता देते हैं और फ्रीबीज को अनुत्पादक व्यय मानते हैं।

(ग) क्षेत्रीय और जातीय प्रभाव

- कुछ राज्यों में फ्रीबीज विशेष समुदायों या जातीय समूहों को ध्यान में रखकर बनाए जाते हैं।
- कुछ क्षेत्रीय दल विशेष वर्गों के लिए मुफ्त योजनाएँ लाते हैं जिससे वे अपना वोट बैंक मजबूत कर सकें।

(घ) चुनावी नतीजों पर प्रभाव

- तमिलनाडु, दिल्ली और पंजाब जैसे राज्यों में देखा गया है कि जहाँ फ्रीबीज अधिक दिए गए, वहाँ राजनीतिक दलों को इसका सीधा लाभ मिला।
- कुछ मामलों में यह भी देखा गया है कि फ्रीबीज देने के बाद सरकारों को वित्तीय संकट का सामना करना पड़ा, जिससे विकास कार्य प्रभावित हुए।

3. फ्रीबीज के सकारात्मक और नकारात्मक प्रभाव

(क) सकारात्मक प्रभाव

- गरीबों और जरूरतमंदों को राहत:** आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों को बुनियादी जरूरतों की पूर्ति होती है।
- सामाजिक और डिजिटल समावेशन:** मुफ्त शिक्षा, लैपटॉप और इंटरनेट जैसी सुविधाएँ डिजिटल विभाजन को कम कर सकती हैं।
- सकारात्मक राजनीतिक भागीदारी:** चुनावी प्रक्रिया में उन मतदाताओं की भागीदारी बढ़ती है जो आमतौर पर निष्क्रिय रहते हैं।
- अल्पकालिक आर्थिक वृद्धि:** मुफ्त सेवाओं से स्थानीय बाजार में माँग बढ़ सकती है, जिससे अर्थव्यवस्था को लाभ मिल सकता है।

(ख) नकारात्मक प्रभाव

- राजकोषीय घाटा:** अनियंत्रित फ्रीबीज सरकारी बजट पर भारी दबाव डालते हैं और दीर्घकालिक ऋण संकट को जन्म दे सकते हैं।
- संरचनात्मक विकास की उपेक्षा:** बुनियादी ढाँचे और उद्योगों में निवेश कम हो जाता है, जिससे आर्थिक वृद्धि बाधित होती है।
- नैतिक जोखिम (Moral Hazard):** मुफ्त सेवाओं की निरंतरता मेहनत और आत्मनिर्भरता की भावना को कमजोर कर सकती है।
- चुनावी अनैतिकता:** फ्रीबीज का उपयोग कई बार अनुचित चुनावी लाभ लेने के लिए किया जाता है, जिससे लोकतांत्रिक मूल्यों को क्षति पहुँचती है।

4. विभिन्न देशों में फ्रीबीज और उनके प्रभाव

(क) भारत:

- तमिलनाडु में मुफ्त टीवी, लैपटॉप और सिलाई मशीन जैसी योजनाएँ दी गईं।
- दिल्ली में मुफ्त बिजली, पानी और बस यात्रा का चुनावी लाभ मिला।

- पंजाब में किसानों के लिए कर्ज माफी ने चुनावी सफलता दिलाई।

(ख) अमेरिका:

- अमेरिका में बेरोजगारी भत्ता और स्वास्थ्य सेवाओं पर सब्सिडी दी जाती है, लेकिन इन योजनाओं के लिए सख्त बजटीय प्रबंधन किया जाता है।

(ग) यूरोपीय देश:

- नॉर्डिक देशों (स्वीडन, डेनमार्क, नॉर्वे) में मुफ्त स्वास्थ्य और शिक्षा की सुविधा है, लेकिन इसे संतुलित कर-नीति द्वारा वित्तपोषित किया जाता है।

5. वैकल्पिक रणनीतियाँ और समाधान

फ्रीबीज नीति को पूरी तरह समाप्त करना संभव नहीं है, लेकिन इसे संतुलित किया जा सकता है:

- रोजगार सृजन पर ध्यान:** सरकारों को मुफ्त सुविधाओं के बजाय स्वरोजगार और उद्यमशीलता को बढ़ावा देना चाहिए।
- शिक्षा और कौशल विकास:** मुफ्त सेवाओं के स्थान पर व्यावसायिक प्रशिक्षण और तकनीकी शिक्षा को प्राथमिकता दी जानी चाहिए।
- संतुलित कल्याणकारी योजनाएँ:** लक्षित लाभार्थियों को ही सब्सिडी दी जानी चाहिए ताकि सरकारी खर्च नियंत्रित रहे।
- आर्थिक अनुशासन:** नीति आयोग और वित्त आयोग को सख्त बजटीय अनुशासन लागू करना चाहिए ताकि राजकोषीय संतुलन बना रहे।

चुनाव सुधार और वैकल्पिक समाधान

चुनाव सुधारों के तहत, यह आवश्यक है कि मुफ्त सुविधाओं के वितरण को पारदर्शी और सीमित किया जाए। चुनाव आयोग को चाहिए कि वह राजनीतिक दलों द्वारा फ्रीबीज की घोषणाओं को उचित वित्तीय योजनाओं के साथ प्रस्तुत करने की अनिवार्यता लागू करे।

कुछ महत्वपूर्ण सुझाव निम्नलिखित हैं:

- लक्षित कल्याणकारी योजनाएँ (Targeted Welfare Schemes):** फ्रीबीज की नीति को संपूर्ण आबादी पर लागू करने के बजाय केवल जरूरतमंद वर्गों तक सीमित किया जाना चाहिए।
- रोजगार और उद्यमशीलता पर ध्यान:** सरकारों को मुफ्त सेवाओं के बजाय कौशल विकास, स्वरोजगार और स्टार्टअप को बढ़ावा देना चाहिए।
- बजटीय अनुशासन (Fiscal Discipline):** फ्रीबीज योजनाओं के लिए एक निश्चित बजट सीमा निर्धारित की जानी चाहिए, ताकि आर्थिक असंतुलन उत्पन्न न हो।
- मतदाता जागरूकता:** जनता को यह समझाने की आवश्यकता है कि अल्पकालिक लाभ से अधिक महत्वपूर्ण दीर्घकालिक विकास और आर्थिक स्थिरता है।

फ्रीबीज और मतदाता व्यवहार का मुद्दा लोकतंत्र, चुनावी नैतिकता और आर्थिक नीतियों का जटिल मिश्रण है। अल्पकालिक रूप से यह मतदाताओं को आकर्षित कर सकता है और सरकारों की लोकप्रियता बढ़ा सकता है, लेकिन दीर्घकालिक रूप से यह राष्ट्र की आर्थिक नींव को कमजोर कर सकता है।

इसलिए, एक संतुलित दृष्टिकोण अपनाना आवश्यक है, जिसमें जरूरतमंदों को आवश्यक सहायता मिले, लेकिन मुफ्त सेवाओं को राजनीतिक हथियार की तरह इस्तेमाल करने से बचा जाए। चुनावी प्रतिस्पर्धा को केवल मुफ्त सुविधाओं तक सीमित करने के बजाय, राजनीतिक दलों को विकास, शिक्षा, स्वास्थ्य और रोजगार पर केंद्रित योजनाओं को प्राथमिकता देनी चाहिए। इसके साथ ही, मतदाताओं को भी अपनी चुनावी पसंद में दीर्घकालिक प्रभावों को ध्यान में रखना चाहिए, ताकि लोकतंत्र की स्थिरता और देश की प्रगति सुनिश्चित हो सके।

निष्कर्ष

लोकतंत्र में चुनाव प्रक्रिया केवल सत्ता परिवर्तन का माध्यम नहीं है, बल्कि यह सामाजिक,

आर्थिक और राजनीतिक प्रवृत्तियों का प्रतिबिंब भी होती है। फ्रीबीज (Freebies) यानी मुफ्त सुविधाएँ देने की नीति आज विश्व के कई लोकतांत्रिक देशों, विशेष रूप से भारत में, चुनावी रणनीति का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन चुकी है। यह नीति अल्पकालिक रूप से राजनीतिक दलों को लाभ पहुँचाती है और गरीब तथा निम्न वर्गों को तात्कालिक राहत प्रदान करती है। लेकिन इसके दीर्घकालिक प्रभावों को ध्यान में रखना आवश्यक है, क्योंकि फ्रीबीज की अनियंत्रित नीति देश की आर्थिक स्थिरता, विकास और सार्वजनिक प्रशासन की गुणवत्ता पर नकारात्मक प्रभाव डाल सकती है। फ्रीबीज नीति मतदाता व्यवहार को सीधे प्रभावित करती है, विशेष रूप से उन वर्गों को, जो आर्थिक रूप से कमजोर हैं। चुनावों में यह देखा गया है कि जो राजनीतिक दल मुफ्त सेवाओं और सुविधाओं का वादा करते हैं, वे अक्सर मतदाताओं का ध्यान आकर्षित करने में सफल होते हैं। इसके परिणामस्वरूप, कई बार मतदाता दीर्घकालिक नीतिगत सुधारों की तुलना में तात्कालिक लाभ को प्राथमिकता देने लगते हैं। यह प्रवृत्ति लोकतांत्रिक प्रक्रिया के संतुलन को प्रभावित कर सकती है, क्योंकि मतदाता अपनी पसंद केवल मुफ्त सुविधाओं के आधार पर निर्धारित करने लगते हैं, न कि दीर्घकालिक विकास योजनाओं और नीतियों के आधार पर। फ्रीबीज का उपयोग यदि सही तरीके से किया जाए, तो यह सामाजिक कल्याण और आर्थिक समानता को बढ़ावा देने में सहायक हो सकता है। उदाहरण के लिए, यदि सरकारें गरीब वर्गों को मुफ्त शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाएँ और रोजगार सहायता प्रदान करती हैं, तो यह एक सकारात्मक निवेश साबित हो सकता है। लेकिन जब मुफ्त सेवाओं को बिना किसी दीर्घकालिक वित्तीय योजना के लागू किया जाता है, तो इससे सरकारी खजाने पर अत्यधिक बोझ पड़ता है और आर्थिक असंतुलन उत्पन्न होता है।

राजकोषीय घाटा (Fiscal Deficit) बढ़ने पर सरकार को अन्य महत्वपूर्ण क्षेत्रों, जैसे बुनियादी ढाँचे, स्वास्थ्य, और औद्योगिक विकास के लिए धनराशि में कटौती करनी पड़ती है। कई बार, फ्रीबीज नीति के कारण सरकारी ऋण (Public Debt) अत्यधिक बढ़ जाता है, जिससे भविष्य की पीढ़ियों पर वित्तीय दबाव बढ़ता है। सामाजिक दृष्टि से देखा जाए तो, लगातार मुफ्त सेवाएँ प्राप्त करने से समाज में **"निर्भरता मानसिकता" (Dependency Mentality)** विकसित हो सकती है। यह मानसिकता लोगों को आत्मनिर्भर बनने से रोक सकती है और उनकी उत्पादकता को कम कर सकती है। यदि लोग मुफ्त सेवाओं पर अधिक निर्भर हो जाते हैं, तो यह दीर्घकालिक रूप से राष्ट्र की आर्थिक वृद्धि को बाधित कर सकता है।

REFERENCES

1. भारत निर्वाचन आयोग की रिपोर्ट्स।
2. नीति आयोग और वित्त आयोग के आर्थिक अध्ययन।
3. "Electoral Incentives and Freebies: A Global Perspective" – David L. Weimer।
4. भारतीय अर्थव्यवस्था – रमेश सिंह।
5. विभिन्न राज्यों में चुनाव परिणाम और फ्रीबीज नीति पर समाचार पत्रों के विश्लेषण।